

किमर्थं न नियोजितः R. 4, 16, 47. BHAG. 3, 36. MBH. 4, 102. HARIV. 9695. R. GORR. 2, 16, 11. 3, 33, 2. 5, 28, 10. 56, 30. MĀRK. P. 31, 26. fg. KUSUM. 23, 8. — 3) *hingeben*: वित्तं सुपात्रे यो नियोजयेत् Spr. 1862. यदि स्वयमेवात्मानं वधाय नियोजयति PĀNĀT. 70, 3. *übertragen*: उत्तमाधममध्यानि बुद्धा कार्यणि पार्थिवः । उत्तमाधममध्येषु पुरुषेषु नियोजयेत् ॥ MĀTSJA-P. 89 im ÇKDR. u. मध्य adj. — 4) *anwenden, in's Werk setzen*: पूर्वं देवं (sc. कार्यं) नियोजयेत् M. 3 204. बुद्धिम् den Verstand anwenden Spr. 179. — 5) *Jmd mit Etwas (instr.) versehen, einer Sache theilhaftig machen*: स्मरं वपुषा स्वेन नियोजयिष्यति KUMĀRAS. 4, 42. शासनशतेन PĀNĀT. 4, 25. अग्नागतक्रियया 117, 12. शपथैः so v. a. *beschwören* VARĀH. BRH. S. 88, 41. देशत्यागेन *belegen* —, *bestrafen mit* (unter *नियोजयितव्य* ungenau übersetzt) PĀNĀT. 261, 6.

— अनुनि so v. a. नि 2), mit loc. oder dat.: ब्रह्मण्येव तत्रमनुनियुनक्ति AIR. BR. 2, 33. PĀNĀT. BR. 18, 1, 14. 19, 16, 6. KĀTH. 29, 9.

— उपनि med. *ketten an* (loc.) KĀTH. 29, 9.

— विनि med. P. 1, 3, 64. VĀRTI. selten act. 1) *lösen, abtrennen*: रू-पेषु विनियुक्तेषु vom Wagen abgelöst MBH. 1, 5491. pass. *auseinander fallen*: (गृह्णाणि, देहानि) कालेन विनियुस्यते 11, 91. — 2) *abschiessen*: विनियोद्याम्यहं (विनिर्योद्यामि SCHL.) बाणावृत्तिगजमर्मसु R. ed. Bomb. 2, 23, 37. *richten auf*: प्रत्येकं विनियुक्तात्मा KUMĀRAS. 2, 31. — 3) *Jmd stellen an, anweisen zu, bestimmen zu, anstellen, beauftragen*: शेषां सेनां गृह्णाद्वारि विनियुस्य HARIV. 8034. रत्नार्थं यज्ञवाटस्य पाण्डवान्विनियुस्य 8033. 7048. कार्यं त्वां विनियोद्यामि MBH. 1, 4152. कार्यं ऽत्र विनियुस्यताम् R. 5, 2, 6. विनियुञ्जीत रास्ये त्वाम् MBH. 9, 233. R. 4, 9, 4. अश्वे 7, 92, 2. विनियुञ्जे भोगभुक्त्यं पुंसः SARVADARÇANAS. 88, 16. यथा सप्ताडवाधिकृतान्विनियुञ्जे PRAÇNOP. 3, 4. विनियुञ्ज माम् MBH. 14, 1650. R. 2, 59, 20. 4, 63, 28. 7, 13, 3. सद्यो च विनियुस्यताम् *er werde in die Freundschaft eingesetzt* so v. a. *er werde zum Freunde gemacht* HARIV. 4034. — 4) *Etwas anwenden, verwenden, gebrauchen* UTTARAB. 109, 14 (148, 10). KĀTHĀS. 22, 29. 53, 97. 90, 23. ÇĀMĒ. zu BRH. ĀR. UP. S. 271 (अविनियुक्तव). 303. zu KHĀND. UP. S. 51. KULL. zu M. 8, 30. 212. 11, 25. SARVADARÇANAS. 124, 17. किञ्चिद्विनियुस्य च *Etwas davon genießend* DHĪRTAS. 95, 9; eben so und zwar mit kleiner Schrift als scenische Bemerkung ist zu lösen 90, 10. — Vgl. विनियोग fg. — caus. 1) *Jmd an Etwas stellen, anweisen zu, beauftragen mit*: विनायकः कर्म विप्रसिद्धार्थं विनियोजितः JĀSĀ. 1, 270. तेषामुत्पादनार्थाय मया त्वं विनियोजितः HARIV. 3003. अस्त्रेषु 9593. विनियोगे ऽस्मिन् R. 3, 60, 38. यो यत्र कुशलः कार्यं तं तत्र विनियोजयेत् Spr. 2536. KĀM. NĪTIS. 5, 76. नरं पशुत्वे विनियोजितम् *zum Opferthier erkoren* R. GORR. 1, 63, 7. गुह्यकाधिपतित्वे MĀRK. P. 108, 20. मयात्र विनियोजितः 132, 37. R. 4, 20, 11. — 2) *Jmd Etwas übertragen*: सर्वमेतत्तु भृत्येषु विनियोजयेत् M. 7, 226. — 3) *Jmd (dat.) Etwas (acc.) anbieten, darreichen* PĀNĀT. 3, 7, 25. — 4) *anwenden, gebrauchen* ÇVETĀÇV. UP. 5, 5. 6, 4. SÇCR. 1, 58, 12. — 5) *verrichten*: कलासेवाकर्म PĀNĀT. 3, 7, 19.

— संनि 1) *bringen* —, *versetzen in*: ततो मा विषमे क्वथ्य व्यसने संनियोद्यति MĀRK. P. 99, 20. — 2) *Jmd anweisen*: तदर्थं संनियोद्यामि सर्वानेव दिवौकसः MBH. 1, 2500. — Vgl. संनियोग. — caus. 1) *bringen auf, in, versetzen in*: तदेनं तनयं मार्गं प्रवृत्तेः संनियोजय MĀRK. P. 26, 27. किमर्थं दिव्यमात्मानं मानुष्ये संनियोजयत् HARIV. 2140. — 2) *stellen an, VI. Theil.*

*anweisen zu, betrauen mit, beauftragen*: साचिच्ये संनियोजितः Spr. 2348. राज्ञो तु प्रतिपूजार्थं संनियोजयत् MBH. 2, 1291. R. GORR. 1, 39, 23. तीरसंभावनादीप कृत्तिकाः संनियोजयत् R. SCHI. 1, 38, 23. वसिष्ठं संनियोजयत् । स्वदारेषु (sc. अप्तयार्थम्) MBH. 1, 6912. तत्र ताः संनियोजय BRAHMA-P. in LA. (III) 50, 22. MBH. 4, 462. — 3) *zuweisen, bestimmen*: प्रुभाप्रुभं समभ्येति विधिना संनियोजितम् Spr. 10.

— निम्, partic. निर्युक्त HARIV. 3438. 4643. 11783. 12338; statt dessen die neuere Ausg. निर्युक्त. st. सारनिर्युक्तं 4330 hat die neuere Ausg. साधुनिर्युक्तं und st. चारुनिर्युक्ता 4633 चारुनिर्युक्ता. 4328 liest die neuere Ausg. दृढनिर्युक्त. st. संयुक्त der älteren. — Vgl. निर्याग.

— विनिम् *abschiessen*: विनिर्योद्याम्यहं (विनियोद्यामि cd. Bomb.) बाणावृत्तिगजमर्मसु R. 2, 23, 37. wohl nur Druckfehler.

— प्र med., ausnahmsweise auch act. P. 1, 3, 64. VOP. 23, 51. 1) *anschirren, anspannen*: पृषतीः RV. 1, 83, 5. 5, 32, 8. wohl auch 10, 33, 1. प्रयुञ्जती दिव एति 5, 47, 1. यानेन गोभिः श्वेतैः प्रयुक्तेन R. 1, 17, 14. गो-प्रयुक्तदान so v. a. गोप्रयुक्तयानदान MBH. 13, 3534. प्रयुक्तेन्द्रियवाग्निं BRAHMA-P. in LA. (III) 52, 12. — 2) *in Bewegung setzen, werfen, schleudern, abschiessen*: नैतानि (अस्त्राणि) निरधिष्ठाने प्रयुस्यते MBH. 3, 12309. 12017 (act.). 5, 7173. 7291 (act. und med.). RAGH. 7, 58. KATHĀS. 39, 58, 50, 65. BHĀG. P. 3, 19, 22. न सन्नवाहाय — प्रायुङ्क्त भूयः स गदाम् 6, 11, 12. परमास्त्रं प्रयुक्तम् MBH. 1, 214. 3, 7282. Spr. 4943. RAGH. 2, 34. 12, 99. MĀRK. P. 134, 44. सुप्रयुक्तशर H. 772. अंसिः — ईशप्रयुक्तः *geschwungen* BHĀG. P. 6, 8, 24. अतान्प्रयोक्तुम् *die Würfel werfen* MBH. 4, 224. मरुत्प्रयुक्ता वाललताः *bewegt* RAGH. 2, 10. शायः प्रयुक्ता ऽयं मयि त्वया *geschleudert* MBH. 1, 6734. स्थाने रोषः प्रयुक्तः *ausgelassen* 6845. उपो ये ते प्र यामिषु युञ्जते मनः *richten auf* RV. 1, 48, 4. ज्ञातोपायप्रयुक्तधी RĪGĀ-TAR. 4, 525. Worte u. s. w. *richten an, vorbringen, hersagen, aussprechen*: देवतायां स्तुतिं प्रयुञ्जे NĪR. 7, 1. प्रायुञ्जत तदशिषः R. 1, 13, 38 (33 GORR.). रामलक्ष्मणसीतानाम् 2, 32, 11 (act.). 35, 7. रामाय R. GORR. 2, 32, 10. 4, 8, 57 (act.). RAGH. 5, 35. 11, 5. 15, 8. BHĀG. P. 4, 9, 59. 7, 10, 33. 9, 3, 19. P. 8, 2, 83. Sch. प्रास्थानिकं स्वस्त्ययनम् RAGH. 2, 70. M. 3, 152. मङ्गलानि R. 3, 6, 12. मा च शास्त्रानुगो वाचं प्रयुञ्जीत कदा च न R. GORR. 2, 79, 11. वाचा स्वरसंपत्प्रयुक्तया 4, 63, 11. KĀM. NĪTIS. 17, 15. BHĀG. P. 6, 10, 28. BHĀT. 8, 39. द्वेष-प्रयुक्तं वचः KATHĀS. 34, 195. प्रीतिवाक्यानि ह्यह्यानि प्रयुस्य मुनये HARIV. 7233. R. 3, 38, 27. गिरं नस्वत्प्रवोधप्रयुक्ताम् RAGH. 5, 74. तिस्रो मात्रा मृत्युमत्यः प्रयुक्ताः *ausgesprochen* PRAÇNOP. 5, 6. गौः सम्पत्प्रयुक्ता, उ-त्प्रयुक्ता Spr. 4034. SĀH. D. 1, 18. मन्त्रो ह्यनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्ता न तमर्थमाह *ein unvollständiger oder ein nach Betonung oder Laut falsch hergesagter Spruch* ÇIKSHĀ 52. सुस्वरेण सुवक्त्रेण प्रयुक्तं ब्रह्म 17. एवं वर्णाः प्रयोक्तव्या नाव्यक्ता न च पीडिताः 21. Schol. zu GĀIM. 1, 1, 5. प्रयुञ्जीथा रञ्जयन्साम किञ्चन KATHĀS. 6, 54. किं ब्रवीषीति यन्नाथे विना पात्रं प्रयुस्यते *gesprochen wird* Cit. beim Schol. zu ÇĀK. 31, 7. — 3) *Jmd antreiben, anweisen, heissen* BHĀT. 8, 96. भर्त्रा ध्रुवदर्शनाय प्रयुस्यमाना KUMĀRAS. 7, 85. KATHĀS. 33, 95. गर्भस्तोत्पादने मम 26, 191. HARIV. 10314. अत्र प्रयुस्यते सर्गे प्रकृतिरनेन WILSON, SĪMĀHJAK. S. 183. BHĀT. 3, 54. अरण्ययाने सुकरे पिता मा प्रायुङ्क्त रास्ये वत उक्करे त्वाम् 51. प्रयुस्यमान als Erkl. von प्रयोस्य (der angewiesen wird neben प्रयोजकं der da anweist; unter d. Ww. unrichtig erklärt) Z. d. d. m. G. 7, 168, N. 1. अथ केन प्रयुक्ता ऽयं